"सखी जीवन हमारा ए"

आत्म सम्बन्धी सुन्दर साथ जी, इस खेल में तीनों तरह की सृष्टि आई है। जीवसृष्टि अर्थात् माया के जीव जिनका कार्य कमाना-खाना-पीना और सोना है। जिसके लिए वाणी में फरमाया है कि-

सूरज उग्या देख के, लेत अन्धेरी घेर।।

अर्थात सुबह होते ही माया के कार्य में व्यस्त होकर अपना अनमोल, हीरा जन्म अर्थात् मानव तन के कीमती क्षणों को गवां रहे हैं। पारब्रह्म अक्षरातीत की पहचान नहीं होने के कारण ही यह आवागमन के चक्कर में फंसे रहते हैं।

दूसरे ईश्वरी सृष्टि जिनका जीवन उस पारब्रह्म की पहचान कर उसकी भक्ति में लीन रहना है। जो जाग्रत बुद्धि के ज्ञान से धनी की पहचान कर अक्षर धाम पहुँचती है।

तीसरी ब्रह्मसुष्टि जिनका जीवन इन दोनों सृष्टियों से न्यारा है। क्योंकि उनका दिल हकीकी है। अर्थात् उनके दिल में हक की बैठक होने से उन पर हक की विशेष हिदायत है। हक स्वयं श्री राजी महाराज हमें सिखापन देकर समझा रहे हैं कि अपना जीवन कैसा होना चाहिए? बेशक माया में आकर इन्हें सब कुछ भूल गईं अपने सुख और आनन्द को भूलीं, उस इश्क को भूल गये जो हर पल अपने धनी से लिया करते थे। उसी इश्क को उपजाने के लिये धनी स्वयं उपाय बता रहे है।

तुमको इश्क उपजावने, करू सो अब उपाय।
पूर चलाऊ प्रेम के, ज्यो याही में छाक छकाए।।

परि. प्र. ४ चौ।

इश्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊ जिनस।
इश्क आया तब जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस।।

परि. प्र. ४ चौ. २

जब हमें उसका रस अर्थात् उसके आनन्द का रंग लग जाये तो हमारा चित्त हर पल परमधाम के सुखों में लगा रहेगा। इसके लिए हम प्रत्युत्तर में कहते हैं कि यह कैसे सम्भव है। इसके लिए भी धनी स्वयं रास्ता बता रहे हैं कि हमारी दिनचर्या कैसी हो? जिससे हममें निजघर का इश्क पैदा हो! धनी तो उन सुखों को इस वाणी (बेशक इलम) द्वारा बार-बार याद दिला रहे हैं। परमधाम में कैसी वाहेदत थी, एक दिली थी एक सुख जो राजी से श्यामा जी को मिलता था वहीं सुख बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों को मिलता था। धनी स्वयं फरमा रहे हैं :-

Nijanand App

निसदिन रंगमोहोलन में, साथ श्यामा जी श्याम।।
याद करो सबो अंगो जो करते आठों जाम।।

अगर हम श्री राज जी की अंगना हैं तो उनसे हमारा परमधाम का अखण्ड अटूट सम्बन्ध है। इसलिए सब फर्ज निभाते हुये भी हमें हर पल उन सुखों को याद करना है। पच्चीस पक्षों में सुरता को ले जाना है सतगुरू की कृपा से उनके संग जमुना जी तक जाकर केलपुल को पार कर पाट घाट पर स्नान करके अमृत वन के बीचों-बीच रींस से चाँदनी चौक पहुँचना है। चाँदनी चौक से सौ सीढ़ियां २० चाँदे चढ़कर मुख्य द्वार से प्रवेश कर २४ थम्भ के चौक को पार कर चार चौरस हवेली को पार कर पांचवी मूल-मिलावे की गोल हवेली में पहुँचकर सामने युगल स्वरूप सिंहासन पर बिराजे श्री राज श्यामा जी को प्रणाम करना।

किस तरह पांचवी भोम के रंग परवाली मन्दिर से राज श्यामा जी को उठाना हमारी दिनचर्या यहीं से प्रारम्भ होती है। उठाकर उन्हें स्नान करवा कर बस्त्र पहनाने की सेवा करनी है। किस तरह श्री राज श्यामा जी को सिंघासन पर बैठाकर मंगल आरती करनी है। सब सखियां व श्री राज श्यामा जी तीसरी भोम में पधारे। पशु-पक्षियों को दर्शन देना फिर युगल स्वरूप श्री श्याम श्यामा का सिनगार व बाल-भोग। इसी तरह फिर ७.३० बजे अक्षर-ब्रह्म को दर्शन देना नवरंग बाई द्वारा नृत्य और मधुर-मधुर संगीत, सखियों द्वारा पाक-शाक-पान-मेवा-बनों से लाना। लाड़बाई के जुत्थ द्वारा दोपहर का भोजन कराना। उसके पश्चात् श्री राज-श्यामा जी का नीलो-पीलो मंन्दिर में पौढ़ना। शाम को ४.३० बजे श्री राज श्यामा जी का सखियों के साथ वनों में, पच्चीस पक्षों के कहीं भी सैर को जाना। श्री राजी की सवारी का धूमधाम से निकलना। वनों में आनन्द-विलास की लीला कर सुखपालों का रंगमहल की छठी भोम में पहुँचना चौथी भोम में नवरंग बाई की निरत का आनन्द लेना और पांचवी भोम में श्री राज श्यामा जी का पोढ़ना।

इन सभी लीलाओं का चितवन में आनन्द लेना हमारी दिनचर्या में होना चाहिए।

माया तो हर पल अपनी ओर खीचती है, धनी अपने सुखों की याद दिलाते हैं। यहाँ का एक-एक पल कीमती है। इसलिए एक पल को भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। यदि ऐसा हमारे जीवन में होने लगता है तो आतम कभी अपने, स्वरूप की पहचान होती है। कि मैं यहाँ की नहीं मेरा घर परमधाम है। जब आतम को घर के सुखों की याद आने लगे तो हमें समझना चाहिए कि धनी की मेहर है। वह स्वयं इस फरामोशी से हमें निकाल रहे है। हममें इश्क जाग्रत हो, हम अपने धनी के करीब हो इस तरह हमारी सुरता परमधाम के सुखों में घूमने लगती है। धनी से मिलने की तड़प बढ़ने लगती है। हम धनी के सन्मुख होते है। जैसे-जैसे हमारी आतम-परआतम के सुखों में मग्न रहती है हमें माया के दुःख-दुःख नहीं लगते। वाणी में फरमाया भी है।

Nijanand App

ताथे पल-पल में ढिग होइये, सुख लीजे जोस इश्क।
त्यों-त्यों देह दुख उड़सी, संग तज मुनाफक।।

धनी के बिना इश्क नहीं मिलता। धनी की याद आने पर ही उनका इश्क मिलता है। अपनी रहनी करते रहना चाहिए। रहनी करते करते माया का पर्दा हटता जाता है। धनी का इश्क-जोश बढ़ता जाता है। सब संशय मिट जाते है। इसलिए धनी हमें समझा रहें है कि एक पल के लिए भी अपनी सुरता को धनी के चरणों से जुदा न करो तो फिर उठते, बैठते, खाते-पीते उनके सुखो का अनुभव इस खेल में आतम करती है।

बैठते-उठते चलते, सुपन सोबत जाग्रत।
खाते-पीते खेलते, सुख लीजे सब विध इन।।

ऐसा बल जब आतम करती है, तो निश्चय ही रूह को परमधाम के सुखों का बल मिलता है, जीवन सुखमय बनता है। वाणी में धनी ने विस्तार से सुबह से रात्रि तक की परमधाम की लीलाओं का वर्णन किया है। बार-बार धनी के प्रेम-आनन्द-हांस-विलास की बातों को याद करने से निश्चय ही यहाँ बैठे धनी से इश्क हो जायेगा और माया के इस ब्रह्माण्ड में जिस इश्क को भूल गये है अष्ट-पहर की लीला के सुख वाणी से धनी हमें याद दिला रहे है हमारे दिल में परमधाम वाला इश्क जाग्रत हो जाय क्योंकि हमारा जीवन ये ही है। धनी के दिये इस सिखापन को दिल में धारण करें। जो दिनचर्या हमारी परमधाम में थी, पल-पल उसी दिनचर्या को याद कर इश्क में भीगे रहे। जिससे माया का दुख-दुख लगे ही नहीं।

मैं जो दई तुम्हें सिखापन, सो लीजो दिल दे।
महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा एह।।

"प्रणाम जी"
"चरणरज"
श्रीमती कंचन आहुजा
जयपुर

Nijanand App